International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979
Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 5; Issue 3; March 2018; Page No. 95-98

रीवा नगर के नगरीय परिवेश में संयुक्त परिवार के बदलते प्रतिमान का एक सामाजिक अध्ययन

रेखा शुक्ला[1], एवं डॉ० यू० पी० सिंह[2]

[1] शोध छात्रा समाजशास्त्र, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

[2] प्राध्यापक (समाजशास्त्र विभाग), शासकीय महाविद्यालय, त्योंथर, जिला–रीवा, मध्य प्रदेश, भारत ।

सारांश

वास्तव में नगरीकरण की प्रवृत्ति उतनी ही पुरानी है जितनी सभ्यता, फिर भी इसका व्युत्पत्तिमूलक समगुण एक ऐसी सच्चाई को प्रकट करता है, जिसको सही तरह से पहचाना नहीं जा सकता है। अनेक विद्वानों ने नगरीकरण को परिभाषित करने की चेष्ठा की है। फैडरिक रेटजेल ने शहर को एक लगातार और घना, लोगों एवं मकानों का ऐसा जमघट कहा है जिसके अन्तर्गत विस्तृत भूमि हो और वहाँ वृहद व्यापारिक मार्गों का संगम हो। वर्तमान समय में नगरीकरण की प्रवृत्ति बढ़ी है। लोगों का पलायन गाँव से शहर की ओर हुआ है। इन सबका प्रमुख कारण, औद्योगिकरण। वास्तव में शहर वह बस्ती है, जिसका जन्म अचानक ही नहीं हो जाता बल्कि कुछ निश्चित कार्यों व सेवाओं की उपलब्धता के कारण ही वह शहर का रूप धारण कर पाती है। नगरीकरण की प्रवृत्ति परिवर्तनशील है क्योंकि शहर अभी विकास की अवस्था में है। विभिन्न क्षेत्रों में इसके विकास की दशा भी समान नहीं है। संयुक्त परिवार के सम्बन्धियों के पारस्परिक सम्बन्ध में औपचारिकता और कटुता का प्रवेश हो रहा है तथापि अभी भी अधिकांश परिवारों में घनिष्ठ और औपचारिक सम्बन्ध बने हुए हैं।

मूल शब्द : संयुक्त परिवार, नगरीकरण, सामाजिक, रीवा नगर।

प्रस्तावना

यह एक अत्यंत संयुक्त तत्व है तथा कोई भी वर्तमान सिद्धान्त यद्या–विवरण का सिद्धांत, प्रत्यार्वन का सिद्धांत तथा आर्थिक आधार सिद्धान्त अनेके अथवा सामूहिक रूप से विकसित एवं विकासोन्मुख अर्थव्यवस्था में नगरीकरण की व्याख्या नहीं कर सकते। इसमें व्यवहारात्मक, संरचनात्मक तथा जनांककीय साधन स्वयं विद्यमान है जिनकी व्याख्या एक दिये हुए चरों द्वारा नहीं हो सकती। इसलिए आवश्कता यह है कि नगरीकरण की छिपी हुई मात्रा की व्याख्या हेतु अनुकूलतम कार्यो एवं अधिकतम विशेषतओं के साथ सभी संभव चरों का अध्ययन किया जाय। नगरीकरण सामाजिक व्यवहार का सूचक है कि वर्तमान शहरी दशा को लोग स्वयं कैसे अपनाते हैं। यह सामाजिक जीवन के सम्पूर्ण प्रतिरूप में क्रांतिकारी परिवर्तन निर्धारण कर सके। कार्यिक खण्डों से आशय भूमि के एक निश्चित क्षेत्र को किसी विशेष उपयोग में प्रयुक्त होने से होता है जो इमारतों, उद्योगों एवं खनन कार्यो से सम्बन्धित होता है।

अनेक अर्थशास्त्रियों ने अपने अध्ययन में नगरीय जनसंख्या की कार्यात्मक संरचना को प्राथमिकता प्रदान की है। शहरों में इस प्रकार के कार्यात्मक स्वरूप न केवल आधुनिक शहरों में पाये जाते हैं, बल्कि मध्ययुगीन एवं प्राचीन शहरों में भी आर्थिक खण्ड विकसित हुए दृष्टिगोचर होते हैं, किन्तु विभिन्न विद्वानों ने कार्यिक खण्डों के निर्धारण में भिन्न–भिन्न पद्धतियों को अपनाया है। डॉ. आर.एल. सिंह ने शहर में पाए जाने वाले कार्यो की संरचना को प्रमुखता दी है। शोधार्थी द्वारा रीवा जिले के शहरों की कार्यात्मक संरचना के अन्तर्गत शहर में स्थित इमारतों का किस कार्य में प्रयोग होता है के आधार पर कार्यात्मक संरचना का अध्ययन किया गया है जो रीवा जिले के शहरों के विस्तृत सर्वेक्षण पर आधारित है। यदि कोई भवन विभिन्न कार्यो में प्रयुक्त होता है, तो प्रकृति के प्रतिशत पर प्राथमिकता प्रदान की गई है।

नगरीकरण से तात्पर्य है, कुल जनसंख्या की तुलना में नगरीय जनसंख्या की तीव्र वृद्धि। ऐतिहासिक उदाहरणों से यह ज्ञात होता है कि नगरीकरण नगरों की जनसंख्या में स्वभाविक वृद्धि के आधार पर संभव नहीं है। इसलिए नगरीकरण की गति तथा स्तर कृषि कार्यो से कृष्येन्तर आर्थिक क्रियाओं में क्रियाशील जनसंख्या के प्रत्यावर्तन के साथ ही ग्राम्य जनसंख्या के शहरोन्मुख प्रवास पर आधारित है। शहरों की उत्तरोत्तर वृद्धि जनसंख्या के उस सतत प्रवाह का प्रतिफल है जो ग्रामीण क्षेत्रों छोटे कस्बों से रोजगार तथा रहन–सहन के उच्च स्तर हेतु शहरों की ओर आकर्षित होती है।[1]

वर्तमान नगरीकरण पश्चिमी देशों की तुलना में कम है, फिर भी नगरीय अतिरेक या छद्म नगरीकरण कहा जाता है। इसका कारण यह है कि यहां नगरी जनसंख्या के अनुपात में नगरीय आर्थिक आधार दुर्बल एवं सुविधाओं की अत्यंत कमी है। नगरों में रोजगार की कमी है। तथा यहां रहने वाली एक चौथाई जनसंख्या भी बेरोजगार है।[2]

नगरीकरण की वृद्धि विभिन्न दशकों में विभिन्न कारणों से प्रभावित हुई है। 1901 से 1921 तक नगरीय जनसंख्या वृद्धि आकाल एवं रोग, 1913 से 1941 द्वितीय विश्व युद्ध, 1941 से 1951 में राष्ट्र विभाजन, 1951 से 61 में सरकार योजनाबद्ध विकास, 1961 से 71 में नवीन नगरीय क्षेत्र के अभ्युदय तथा 1971 से 91 में सरकार के विकेन्द्रीकरण की नीति से प्रभावित हुई, जबकि 1991–2001 के मध्य नगरीय जनसंख्या में केन्द्रीकरण का प्रभाव रहा है।

शोध कार्य के दौरान देखने में आया है कि अधिकांश गाँवों की जनसंख्या आज भी लम्बे समय से स्थिर है। छोटे–छोटे कस्बे जिनका आकार भी लगभग स्थिर है। गाँवों के लिए बाजार और सेवा केन्द्रों का काम करते हैं। हर क्षेत्र और उपक्षेत्र में विभिन्न वर्गो में आने वाले शहर हैं और ऐसा लगता है कि शहरों के इन वर्गो में भी लम्बें अर्से से स्थिरता बनी हुई है, और शहरी विकास का रूप यह रहा है कि विद्यमान शहरों की जनसंख्या बढ़ती गयी है और नये शहरों का विकास अधिक नहीं हुआ है।[3]

नगरीकरण एवं ग्रामों का पुनर्वर्गीकरण भी नगरीय जनसंख्या वृद्धि को प्रभावित करता है। भारत में 1941–51 की अवधि में नहरों एवं

शहरों की संख्या बढ़ी है जो 2390 से 3018 हो गयी 1951 में 628 शहरों की वृद्धि का कारण 1941 में 122 शहरों की अपवर्जन और 750 नये शहरों का समावेश है। 1961 की जनगणना में 1951 के 803 शहर अवर्गीकृत होने से अनगरीय घोषित किए गये। इस प्रकार पुनः वर्गीकरण से प्राप्त कुल नगरीय जनसंख्या तुलनात्मक रूप से कुल नगरीकरण की तुलना में एक छोटे भाग के रूप में रही।[4] अतः जनसंख्या का निरा प्रवास नगरीकरण का मुख्य घटक है और यह एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जिसमें सम्पूर्ण विश्व के नगरीकरण की प्रवृत्ति पूर्ण होती है।

रीवा नगर में जनसंख्या में वृद्धि मूलतः दो प्रकार से हो रही है– एक प्राकृतिक जनवृद्धि द्वारा तथा दूसरा ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय क्षेत्रों की ओर जनसंख्या में स्थानान्तरण द्वारा जनसंख्या वृद्धि उक्त दोनों कारकों में प्रथम (प्राकृतिक जनवृद्धि) का योगदान कम रहता है लेकिन स्थानान्तरण से शहरों की जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि होती है। स्थानान्तरण मुख्यतः दो शक्तियों विस्थापन एवं आकर्षण पर आधारित है इस कारण जनसंख्या में वृद्धि उक्त दोनों प्रकार के स्थानान्तरण का प्रतिफल होती है। तथापि योसर [5] जैसे विद्वानों ने विस्थापन को नगरीय जनसंख्या के वृद्धि का उत्तरदायी घटक माना है। रीवा नगर में नगरीकरण को प्रभावित करने वाले घटकों में ग्रामीण नगरीय प्रवास भी एक महत्वपूर्ण घटक हैं।

भारत वर्ष के मध्य में स्थित म.प्र. राज्य के उत्तरी–पूर्वी द्वार के नाम से प्रसिद्ध रीवा नगर एक मध्यकालीन ऐतिहासिक नगर है। भारत वर्ष के उन 250 नगरों में से एक नगर रीवा है जहाँ की जनसंख्या 2.00 लाख से ऊपर है।[6] रीवा नगर बघेल राजाओं की राजधानी होने का गौरव प्राप्त है। रीवा बघेलखण्ड पठार पर स्थित रीवा राज्य के नाम से जाना जाता रहा है। इस नगर को "महामृत्युंजय" की नगरी एवं इस धरती को वीर प्रसूता के नाम से जाना जाता है।[7] रीवा नगर भौगोलिक मानचित्र पर $24^0.32$ उत्तरी अक्षांश तथा $81^0.24$ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। रीवा जिला की भौगोलिक स्थिति $23^0.11$ से $24^0.18'3$ उत्तरी अक्षांश तथा $81^0.03$ से $82^0.10'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य है।[8] रीवा नगर को स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् विन्ध्य प्रदेश की राजधानी होने का गौरव प्राप्त है। राज्यों के पुनर्गठन के पश्चात् विन्ध्य प्रदेश को मध्य प्रदेश राज्य में सम्मिलित किया गया। तब से (1 नवम्बर 1956) इस नगर को संभागीय मुख्यालय बनाया गया, एवं इस संभाग में रीवा, सतना, सीधी, शहडोल जिले सम्मिलित थे।

रीवा जिला स्थित रीवा नगर जिले का सबसे बड़ा नगर है। वर्तमान में इस नगर को नगर पालिक निगम होने का गौरव प्राप्त है। यह नगर सन् 1618 में अस्तित्व में आया जब बघेला राजा विक्रमादित्य ने यहाँ राजधानी स्थापित की थी।[9] तत्पश्चात यह नगर (1947 तक) रीवा राज्य की राजधानी होने का गौरव प्राप्त किया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् इसे विन्ध्य प्रदेश की राजधानी बनाया गया। 1 नवम्बर 1956 को राज्यों के पुनर्गठन के बाद विन्ध्य प्रदेश को मध्यप्रदेश राज्य में मिला दिया गया तब से इस नगर को जिला मुख्यालय एवं संभागीय मुख्यालय होने का दर्जा प्राप्त है। वर्तमान में रीवा जिले की कुल जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार 2365106 है जिसमें से 1140006 महिलाएँ एवं 1225100 पुरूष है। राज्य की कुल जनसंख्या का 3.16 प्रतिशत जनसंख्या इस जिले में निवास करती है। रीवा जिले की कुल जनसंख्या का 20.90 प्रतिशत नगरीय जनसंख्या है। रीवा नगर की कुल जनसंख्या 235422 है जिसमें से 124624 पुरूष एवं 110788 महिलाएँ हैं। नगर की साक्षरता 87.74 प्रतिशत है जिसमें से पुरूष साक्षरता 92.61 प्रतिशत एवं महिला साक्षरता 81.95 प्रतिशत पाई गई है।

शोध विधि

शोध कार्य में अध्ययन विषय से सम्बन्धित तथ्यों एवं सूचनाओं को एकत्रित कर सांख्यिकीय विधियों से निष्कर्ष प्राप्त किये जाते है। प्रस्तुत अध्ययन विस्तृत क्षेत्रीय अध्ययन से उपलब्ध सूचनाओं एवं विभिन्न कार्यालयों से प्राप्त द्वितीयक आंकड़ों की सहायता से पूर्ण किया गया है। अध्ययन की बोधगम्यता हेतु आवश्यकतानुसार आरेखों की सहायता ली गई है।

नगरीय विकास का विश्लेषण–

शहर के विकासक्रम एवं प्रक्रिया का नगरीय भूदृश्य के निर्धारण में विशेष महत्व होता है। शहर स्थलों के आकार में वृद्धि एवं कार्यात्मक विकास के साथ–साथ इसके कार्यात्मक आकारिकीय स्वरूप में गुणात्मक एवं मात्रात्मक दोनों प्रकार का बदलाव देखने को मिलता है। यही कारण है कि नगरीय आकारिकी का अध्ययन करते समय उसके विकास संबंधी पहलुओं पर भी ध्यान केन्द्रित करते है और यह उचित भी हैं। हालांकि जिले में प्रत्येक शहर की संरचना और उसका विकास एक–दूसरे से पूर्णतः मेल नहीं खाता है अर्थात् संरचनात्मक विकास में थोड़ी–बहुत विभिन्नता प्रत्येक शहर में पायी जाती है। इसलिए सैद्धान्तिक पक्षों की मदद से इनका अध्ययन किया गया है। शहरों की आन्तरिक संरचना में थोड़ी बहुत भिन्नताएँ उपस्थित होने पर भी उनकी कार्यात्मक पेटियों एवं उनके स्थानिक प्रतिरूपों के प्रबंध और विकास इत्यादि के संबंध में सामान्य तथ्य दृष्टिगत होते है जो सामान्यतः प्रत्येक शहर में मिल सकते है।

मात्र संरचनात्मक दृष्टि से ही शहर एक दूसरे से भिन्न नहीं होते अपितु एक ही शहर में अवस्थित भिन्न–भिन्न क्षेत्र भी एक दूसरे से स्थानिक विस्तार, कार्यो एवं कार्यात्मक इकाइयों, नगरीयता और संगठन इत्यादि समस्त पक्षों में अत्यन्त विभिन्नता रखते हैं। इस प्रकार की स्थानिक कार्यात्मक विभिन्नता के विकास में अनेक किस्म की शक्तियाँ कार्य करती है। शहर में इन विभिन्नताओं की मौजूदगी के साथ–साथ कुछ समरूप इकाईयों की भी तलाश की जा सकती है। शहर जिस केन्द्र पर सबसे पहले विकसित होता है उसे शहर का मूल स्थान कहते है। आज बघेलखण्ड में प्रायः यही नैतिक स्थान नगरीय केन्द्रबिन्दु के रूप में दृष्टिगत होते है। नगरीय वृद्धि के साथ–साथ इन्हीं केन्द्र बिन्दुओं से शहर का विस्तार होता रहता है तथा जिनसे चारों ओर बाहर की ओर जाने पर दूरी के साथ–साथ नगरीय विशेषताओं में कमी होती जाती है।

रीवा नगर ग्रामीण समाज से युक्त है विकास की दृष्टि से रीवा नगर को विकासशील नगर के अन्तर्गत रखा जा सकता है, किन्तु रीवा नगर के समाज पर ग्रामीण प्रभाव एवं पाश्चात्य प्रभाव देखने को मिलता है। जबकि ग्रामीण अंचलों में मूलभूत सुविधाओं जैसे शिक्षा–दीक्षा, रोटी, कपड़ा और मकान का अभाव है इसलिये यहाँ संयुक्त परिवार के बदलते प्रतिमान अधिक देखे जा रहे हैं। अध्ययन क्षेत्र में लगातार संयुक्त परिवारों में हो रहे विघटन को देखकर ही शोधार्थी ने अपने अध्ययन का आधार रीवा नगर के संयुक्त परिवार के बदलते प्रतिमान को बनाया है।

प्रस्तुत अध्ययन में रीवा नगर के विभिन्न वार्डों से 300 परिवारों का चयन कर संयुक्त परिवारों के बदलते प्रतिमानों के सामाजिक कारणों को समझने का प्रयास किया गया है। अध्ययन से प्राप्त सामग्री का विश्लेषण कर भारतीय समाज में संयुक्त परिवार का क्या स्थान रहा है। शोधार्थी द्वारा इस तथ्य से आंकलन करने का प्रयास किया गया है। निश्चित ही यह अध्ययन संयुक्त परिवार की वास्तविक स्थिति को समझने में सहायक होगा। भारत के अन्य

क्षेत्रों की तरह रीवा नगर में भी परिवार पितृवंशीय या पितृसतात्मक है। वंश माता–पिता के नाम चलता है।

सहकारी और संयुक्त जीवन शैली के एक प्रतिनिधित्वपूर्ण प्रतिमान के रूप में परिवार एक अद्वितीय मानवीय संस्था है। इस संस्था ने निकट रक्त सम्बन्धियों को भौतिक और मानसिक दृष्टि से एक अत्यन्त निकट और आत्मीय सम्बन्ध में आबद्ध किया है। भारतीय संयुक्त परिवार इस संयुक्त और सहकारी जीवन शैली तथा सम्बन्धों की पारस्परिकता का जितनी अधिक मात्रा में प्रतिनिधित्व करता है उतना संसार के अन्य समाजों के परिवार नहीं। परम्परागत संयुक्त परिवार कुछ निकट रक्त सम्बन्धियों का समूह मात्र नहीं है और न ही यह केवल साथ–साथ व्यवसाय, भोजन और निवास करने वाले व्यक्तियों का संग्रह मात्र ही है। बल्कि ये परिवार आध्यात्मिक और सामाजिक मूल्यों, आदर्शों और व्यवहार प्रतिमानों का एक सम्मिश्रण है। अपने आदर्शात्मक स्वरूप में संयुक्त परिवार व्यक्ति के धार्मिक लक्ष्यों और सांस्कारिक उत्तरदायित्वों की पूर्ति का साधन रहा है।

संयुक्त परिवार की व्यवस्था ने परम्परागत भारतीय संस्कृति के स्थायित्व और निरन्तरता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आधुनिक भारत में जिन नवीन सामाजिक सांस्कृतिक परिस्थितियों का विकास हो रहा है उन्होंने भारतीय सामाजिक ढाँचे के विभिन्न आधारभूत तथ्यों को प्रभावित किया है। परिवर्तन की इन नवीन शक्तियों ने संयुक्त परिवार को भी अछूत नहीं छोड़ा है। संयुक्त परिवार विशेष रूप से नगरीय परिवेश में नितान्त नवीन परिस्थितियों के साथ अभियोजित करने में कठिनाई का अनुभव कर रहा है। संयुक्त परिवार की संरचनात्मक विशेषताएँ विशेष रूप से उसके संयुक्तता की प्रकृति सदस्यों के सम्बन्धों की पारस्परिकता, आकार, सदस्यों के व्यवसाय, आर्थिक स्तर, निवास की प्रकृति इत्यादि क्षेत्रों में परिवर्तन की व्यापक क्रियाओं ने अभियोजन, नवीनीकरण, अन्तर्द्वन्द्व आदि प्रक्रियाओं को जन्म देने में सहयोग दिया है। सीमित आकर वाले एकाकी परिवार का विकास पारिवारिक संगठन के क्षेत्र में भारतीय समाज में होने वाला एक अत्यंत महत्वपूर्ण परिवर्तन है।[7]

पारिवारिक संगठन में होने वाले परिवर्तन के उपरोक्त परिवेश में वर्तमान अध्ययन यह देखने का प्रयत्न करता है कि आधुनिक परिवेश में पारिवारिक संगठन की संयुक्तता में क्या परिवर्तन उत्पन्न हो रहे हैं? क्या संयुक्त परिवार की संयुक्तता के आधार बिन्दु नवीन परिवर्तनशील परिस्थितियों में अपने अस्तित्व को बनाए हुए हैं या संयुक्तता के नवीन प्रतिमानों को विकसित कर रहे हैं? क्या एकाकी परिवार व्यक्तिवादी जीवन के आदर्श प्रतिमानों का वास्तविक प्रतिनिधित्व करते हैं या परम्परागत संयुक्त परिवार की जीवन शैली का ही नवीनीकृत स्वरूप प्रस्तुत करते हैं? इन प्रश्नों का अन्वेषण वर्तमान अध्ययन के संयुक्त और एकाकी परिवारों के माध्यम से किया गया है। परम्परागत संयुक्त परिवार की संयुक्तता के जिन आयामों को केन्द्र बिन्दु मानकर वर्तमान अध्ययन का संगठन किया गया है वह इस प्रकार है–

सारणी 1: संयुक्त परिवार में सदस्यों की संख्या

क्र.	सदस्यों की संख्या	परिवार की संख्या	प्रतिशत
1	पाँच या कम सदस्य	62	20.66
2	06–10 सदस्य	137	45.67
3	11–15 सदस्य	63	21.00
4	16–20 सदस्य	38	12.67
योग		300	100

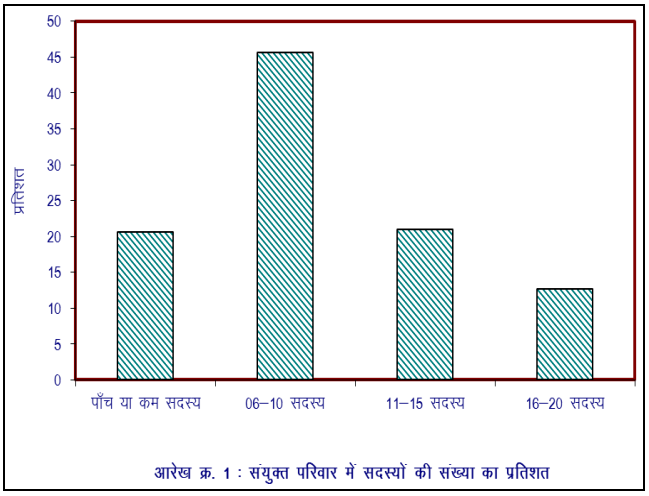

आरेख क्र. 1 : संयुक्त परिवार में सदस्यों की संख्या का प्रतिशत

उपरोक्त सारणी एवं ग्राफ से स्पष्ट होता है कि अध्ययन किए गए संयुक्त परिवारों में पाँच या कम सदस्य वाले परिवार का प्रतिशत 20.66 पाया गया है, 6–10 सदस्य संख्या वाले परिवार 45.67 पाया गया है, 11–15 सदस्य संख्या वाले परिवारों का प्रतिशत 21.00 पाया गया तथा 16–20 सदस्य वाले परिवारों का प्रतिशत 12.67 पाया गया है। यह तथ्य इस बात की ओर संकेत करता है कि संयुक्त कहे जाने वाले परिवारों में भी सदस्यों की संख्या अपेक्षाकृत सीमित होती जा रही है।

सारणी क्रमांक 2 : संयुक्त परिवार में पैतृक सम्पत्ति का स्वरूप

क्र.	सम्पत्ति का स्वरूप	परिवार की संख्या	प्रतिशत
1	संयुक्त सम्पत्ति	227	75.67
2	विभाजित सम्पत्ति	73	24.33
योग		**300**	**100**

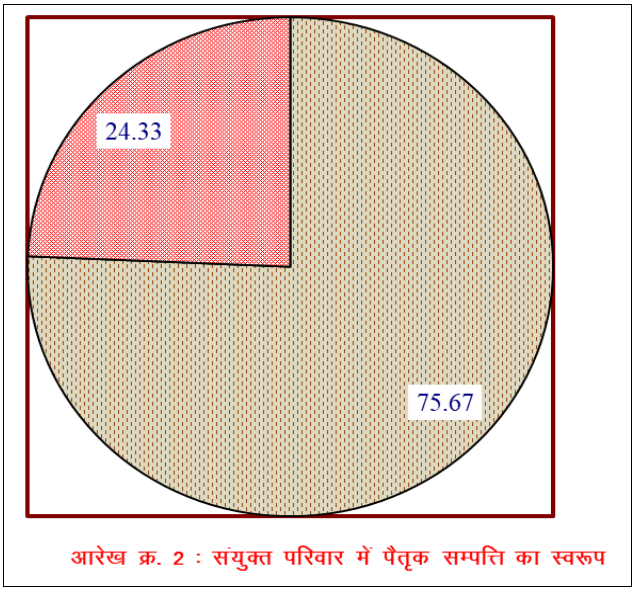

आरेख क्र. 2 : संयुक्त परिवार में पैतृक सम्पत्ति का स्वरूप

उपरोक्त सारणी से प्राप्त तथ्यों का विवेचन करने से स्पष्ट होता है कि 75.67 उत्तरदाताओं के परिवार में सम्पत्ति की प्रकृति संयुक्त है और 24.33 उत्तरदाताओं के परिवार में पारिवारिक सम्पत्ति का विभाजन हो चुका है। विभाजित सम्पत्ति वाले सूचनादाता बहुधा वे हैं जिनकी पैतृक सम्पत्ति का तो बंटवारा हो चुका है परन्तु वर्तमान पीढ़ी में भाई या जीविकोपार्जन करने वाले पुत्र के साथ निवास करते हैं तथा परिवार की संयुक्त आय एक केन्द्रीय कोश या वयोवृद्ध व्यक्ति के द्वारा निर्देशित की जाती है। पारिवारिक संयुक्तता का एक अन्य महत्वपूर्ण आयाम आय के स्रोतों की बहुलता है। परिवार में एक से अधिक जीविकोपार्जन करने वाले सदस्यों की उपस्थिति न केवल परिवार की आर्थिक स्थिति का द्योतक है बल्कि पारिवारिक जीवन की संयुक्तता के विस्तार को भी सूचित करती है।

अध्ययनरत नगरीय परिवार में सदस्यों के मध्य घनिष्ठता को निम्न सारणी के माध्यम से दर्शाया गया है–

सारणी 3: संयुक्त परिवार और सदस्यों के सम्बन्धों की घनिष्ठता का अध्ययन

क्र.	सम्बन्धों की प्रकृति	परिवार की संख्या	प्रतिशत
1	अत्यधिक घनिष्ठ	37	12.33
2	घनिष्ठ	132	44.00
3	औपचारिक	82	27.33
4	कटुतापूर्ण	49	16.34
योग		300	100

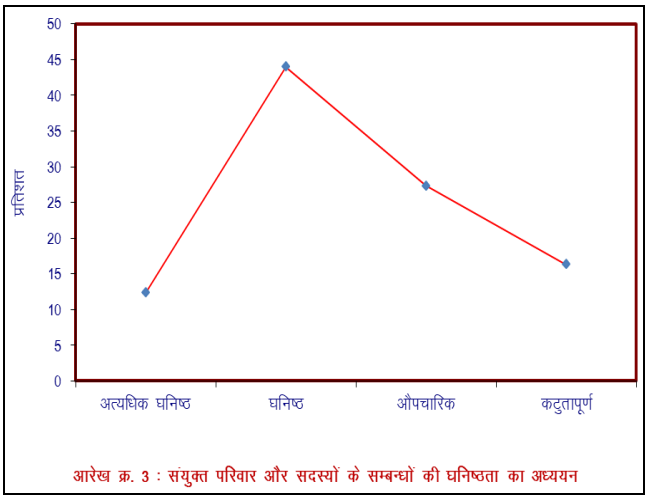

आरेख क्र. 3 : संयुक्त परिवार और सदस्यों के सम्बन्धों की घनिष्ठता का अध्ययन

उपरोक्त सारणी एवं ग्राफ से स्पष्ट होता है कि निकट रक्त सम्बन्धियों के साथ अत्यधिक घनिष्ठ 12.33 प्रतिशत, घनिष्ठ 44.00 प्रतिशत, अनौपचारिक 27.33 प्रतिशत एवं कटुतापूर्ण सम्बन्ध 16.34 प्रतिशत परिवारों में पाया गया है। तथ्यों से स्पष्ट होता है कि यद्यपि संयुक्त परिवार के सम्बन्धियों के पारस्परिक सम्बन्ध में औपचारिकता और कटुता का प्रवेश हो रहा है तथापि अभी भी अधिकांश परिवारों में घनिष्ठ (44.00 प्रतिशत) और औपचारिक सम्बन्ध (27.33 प्रतिशत) सम्बन्ध बने हुए हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के 300 उत्तरदाताओं में से 300 उत्तरदाता संयुक्त परिवार के सदस्य है, अध्ययन की सुविधा हेतु वर्तमान अध्याय में नगरीय संयुक्त परिवारों की संरचनात्मक विशेषता और संयुक्तता की प्रकृति का ही अध्ययन किया गया है। संयुक्त कहे जाने वाले परिवारों में भी सदस्यों की संख्या अपेक्षाकृत सीमित होती जा रही है। पारिवारिक संयुक्तता का एक अन्य महत्वपूर्ण आयाम आय के स्रोतों की बहुलता है। परिवार में एक से अधिक जीविकोपार्जन करने वाले सदस्यों की उपस्थिति न केवल परिवार की आर्थिक स्थिति का द्योतक है बल्कि पारिवारिक जीवन की संयुक्तता के विस्तार को भी सूचित करती है। यद्यपि संयुक्त परिवार के सम्बन्धियों के पारस्परिक सम्बन्ध में औपचारिकता और कटुता का प्रवेश हो रहा है तथापि अभी भी अधिकांश परिवारों में घनिष्ठ (44.00 प्रतिशत) और औपचारिक सम्बन्ध (27.33 प्रतिशत) सम्बन्ध बने हुए हैं।

संदर्भ

1. सिंह वामबली, भारत में शहरीकरण की विशेषताएँ– पत्रिका अंक 11 दिसम्बर 1975
2. डॉ. जगदीश सिंह, डॉ. कमलेवर सिंह एवं डॉ0 रामवरण सिंह – भारत ज्ञानोदय प्रकाशन गोरखपुर 2002 पृ. 100
3. Rakesh Mohan, Chandra Shekhar part. Morphology of Urvanization of India Economic and Political weekly, 1982, 1537.
4. Boque DJ, Zachariah KC. Urvanization and migration in India's Urban fature edited by Roa Turner. Bombay. Oxford University Press, 1952, 27:28.
5. Houser PM. (Ed.) Asia and The far East, Calcutta The push of people from the country side to the cities rather than the pull of Industraial and Ecployment Apportunities in the Urban areas, 1957.
6. डॉ. एस. अखिलेश (2012) रीवा दर्शन, गायत्री पब्लि. रीवा, पृ. 1
7. डॉ. एस. अखिलेश (2012) रीवा दर्शन, गायत्री पब्लि. रीवा, पृ. 2
8. सकेत प्रदीप कुमार (2007) रीवा नगर में पर्यटन विकास एवं सभावनाएँ, एम. फिल. लघु शोध प्रबंध अ.प्र. सिंह विश्वविद्यालय रीवा, पृ. 15
9. रीवा दर्शन, गायत्री पब्लिकेशन्स रीवा, पृ. 9